International Journal of Research in Finance and Management

P-ISSN: 2617-5754
E-ISSN: 2617-5762
IJRFM 2020; 3(2): 50-53
www.allfinancejournal.com
Received: 24-05-2020
Accepted: 26-06-2020

डॉ. नीरज कुमार
एस0 डी0 (पी0 जी0) कॉलेज
मुजफ्फरनगर, बिहार, भारत

Corresponding author
डॉ. नीरज कुमार
एस0 डी0 (पी0 जी0) कॉलेज
मुजफ्फरनगर, बिहार, भारत

आत्मनिर्भरता की ओर भारत : का अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार

सारांश
भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ कि जनसंख्या 80 प्रतिशत कृषि पर निर्भर है परन्तु पिछले चार महीनों में हमारी दुनिया एकदम बदल गई। हजारों लोग की जान चली गयी और लाखों लोग बीमार पड गये। इन सब पर कोरोना का कहर टूटा है जो इस वायरस से बचे हुए उनका जीवन विकट समस्याओं से घिरा हुआ है। लोग गलत मानसिकता, भुखमरी, गरीबी एवं बेरोजगारी, निर्धनता के शिकार हो रहे है। यह वायरस पहली बार चीन के वुहान शहर से दिसम्बर 2019 में सामने आया। इस वॉयरास के सामने आने के पश्चात् दुनिया में सब कुछ उलट–पुलट हो गया और लोग अपना जीवन भय से जीवनयापन करने लगे। देश में कोरोना महामारी से लॉकडाउन के कारण नाई की दुकान, मोची, पान की दुकान व कपडे की दुकानें, रेहडी–पटरी वालों की आजीविका पर सबसे ज्यादा असर पडा। इन समस्याओं को खत्म करने के लिए भारत के प्रधानमंत्री द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक नई योजना की घोषणा की। इस योजना का नाम पीएम स्वनिधि योजना रखा। इसके अन्तर्गत रेहडी–पटरी वालों को 10,000 रू0. का लोन दिये जाने की घोषणा की गई है जिससे आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति मिलेगी। कोरोनावॉयरस के कारण पूरे देश में लॉकडाउन किया गया जिसके कारण देश के सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों, श्रमिकों, मजदूरों और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए इस योजना के तहत आर्थिक पैकेट की घोषणा की गयी।

प्रस्तावना
आत्मनिर्भरता तीन शब्दों से मिलकर बना हुआ है। आत्म+निर्भर+ता यानि स्वयं पर निर्भर होने की स्थिति। मनुष्य या देश को जीवन में दूसरों पर भरोसा न कर आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी होना है, किसी देश या क्षेत्र का विकास उस देश के संसाधनों पर निर्भर करता है जिस देश में संसाधनों की भरपूर मात्रा होगी उस देश का विकास भी उतना ही और भारत जैसे विकासशील देश में विकास की गति को बढाना और देश में पंचवर्षीय योजना का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में आत्मनिर्भरता की परिभाषा में बदलाव आया है। आत्मनिर्भरता, आत्मकेन्द्र से अलग है, भारत वसुधैव कुटुम्बकम् की संकल्पना में विश्वास करता है, चूंकि भारत दुनिया का एक हिस्सा है, अतः भारत प्रगति करता है तो ऐसा करके वह दुनिया की प्रगति में भी योगदान देता है, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्करण नही किया जायेगा अपितु दुनिया के विकास में मदद की जायेगी जिसको देखते हुए भारत के प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत निर्माण की दिशा में विशेष आर्थिक पैकेज 20 लाख करोड रूपये की विशेष कोविड–19 की महामारी से निपटने के लिए की गयी जो भारत की सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर है। पैकेज में भूमि, श्रम, तरलता और कानूनों पर ध्यान किया गया।
कोविड 19 मे देश–दुनिया में बहुत बडी समस्या सामने आयी जिसके कारण केन्द्र सरकार द्वारा सूक्ष्म, लघु, मध्यम वर्गीय गृह उद्योग (MSMEs) के लिए 16 घोषणाएं की गयी जो 12 करोड से ज्यादा लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है जोकि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ है जैसे – मध्यम एवं लघु उद्योगों सहित छोटे व्यापारियों के लिए 3 लाख करोड से अधिक निशुल्क स्वचलित ऋण। इसके अतिरिक्त 20,000 करोड अधीनस्थ ऋण, 50,000 इक्विटी इन्फ्यूशन, 200 करोड रूपये का ग्लोबल टेंडर, 3 महीने के लिए व्यापार और श्रमिकों के लिए 2500 करोड रू0. का ई0 पी0 एफ0 समर्थन, 30000 करोड रूपये तरलता सुविधा, 45000 करोड एन0 बी0 एफ0 सी0 आंशिक क्रेडिट गारन्टी योजना तथा क्पेबवउ के लिए 9,000 करोड रूपये की तरलता इंजेक्शन, RERA के तहत रियल स्टेट परियोजना के पंजीकरण और पूर्णतः तिथि विस्तार की गयी है। इसके अतिरिक्त गरीबों, श्रमिकों और किसानों के लिये की गयी घोषणा जोकि 14 मई, 2020 को भारत आत्मनिर्भर गरीब, श्रमिक और किसान के लिये की गई है जैसे – किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रत्यक्ष सहायता, प्रवासी और शहरी गरीबों के लिये प्रवासियों को वापस करने के लिए मनरेगा सहायता, श्रमिक संहिता में बदलाव, 2021 वन नेशन वन राशन कार्ड द्वारा भारत में किसी उचित मूल्य दुकान से सावर्जनिक प्रणाली का उपयोग, आत्मनिर्भर भारत के अन्तर्गत किसानों की आय का दुगना, और देश की महिलायें उज्जवला योजना के तहत फ्री सिलेण्डर का लाभा प्राप्त कर रही है। लाकडाउन

के चलते केन्द्र सरकार ने 6 करोड 28 हजार उज्जवला सिलेण्डर बांटे है जबकि 8432 करोड रू0. की राशि हितगृहणियों के खाते में गई है। आत्मनिभर्रता, आत्मबल और आत्मविश्वास से ही सम्भव है। हम सब देश के विकास में योगदान दे और वैश्विक आपूर्ति चयन में अपनी भूमिका निभायें और देश को विकास तथा समस्याओं से मुक्त भारत बनाये।

भारत के आत्मनिर्भरता से संबंधित अध्ययनों का पूर्वालोकन

1. विश्व अर्थव्यवस्था (जी0 डी0 पी0) प्रोफेसर अंग्स मैडी सन् द्वारा ऐतिहासिक आंकडों पर 2 जौलाई 2013 पर अध्ययन किया।
2. भारत का आर्थिक सर्वेक्षण 2007 पर संक्षिप्त नीति का अध्ययन किया।
3. अरूण ओझा ''हम तो वर्षों से आत्मनिर्भरता और स्वदेशी मॉडल की वकालत कर रहे है।''
4. ''कोरोना महामारी के बाद आर्थिक राष्ट्रवाद सभी देशों में आयेगा।'' – अरूण ओझा
5. आर0 एस0 एस0 से जुडी इस संस्था ने पी0 एम0 के आत्मनिर्भर बनने का विचार का स्वागत किया।

उद्देश्य

आत्मनिर्भर भारत बनाने के निम्नलिखित उद्देश्य निकलेंगे –

1. भारत की अर्थव्यवस्था, इन्फ्रास्ट्रक्चर तकनीक पर आधारित व्यवस्था पर जोर देना अति आवश्यक है।
2. आत्मनिर्भर बनाने के लिए श्रम व श्रमिक समस्याओं के निदानात्मक प्रयास किये जाने चाहिये।
3. आर्थिक विकास की नीतियों का मुख्य केन्द्र गांव होना चाहिये।
4. उद्योगों का विकेन्द्रीकरण विकास की धारा को गांवों–कस्बों तक लाया जा सके।
5. विदेशी कम्पनियों को भारत में निवेश के लिये आकर्षित करना चाहिये ताकि वे भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता प्रदान करे।
6. मजदूरों एवं श्रमिक समस्याओं का निदान एवं कार्यों के घण्टे नियमित किये जा सके।
7. भारत में वित्तीय प्रणाली को मजबूत बनाना चाहिये जिससे श्रमिकों एवं किसानों की ऋण सम्बन्धी समस्याओं का निदान हो सके।
8. आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को श्रम सुधार शिक्षा सुधार से संभव बनाया जा सके।
9. लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर विशेष जोर दिया जाये।
10. ऑनलाईन सूचना केन्द्र, रोजगार गारण्टी योजना विकास प्रारम्भ होना चाहिये।

परिकल्पना

आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिये निम्न परिकल्पनाओं का विकास किया जाना चाहियेः –

1. आत्मनिर्भर भारत बनाने का प्रत्यक्ष संबंध देश की अर्थव्यवस्था को बढाना है।
2. देश का विकास होगा तभी देश समृद्व शक्ति बनेगा और आत्मनिर्भर बनेगा।
3. देश की आर्थिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, तकनीक का विकास वित्तीय सहायता के माध्यम से होता है।
4. जैसे–जैसे उद्योगों, रोजगार, शिक्षा का विकास होता जायेगा वैसे–वैसे देश आत्मनिर्भरता की सीढी के पायदान पर चढेगा।

विधितन्त्र

प्रस्तुत शोध कार्य के सम्पादन एवं निष्पादन हेतु सर्वप्रथम आत्मनिर्भर भारत के आंकडों का विश्लेषण किया, द्वितीयक आंकडे पत्र, पत्रिकाओं, इण्टरनेट वर्किंग साईट, समाचार पत्र, टी0 वी0 चैनल इत्यादि प्राप्त किये। आंकडों का सैद्वान्तिक विश्लेषण अनुभाविक विधियों के माध्यम से किया गया। आवश्यकतानुसार सांख्यिकी विधियों का विकास किया गया इसके अतिरिक्त रेखाचित्र, तालिका, सरल दण्ड रेखा आरेख का विधियों का विवेचन किया।

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भर का मतलब अपने आप स्वयं निर्भर हो जोकि किसी दूसरे पर निर्भर न हो। इस सन्दर्भ में वर्तमान समय भारत की अर्थव्यवस्था बिल्कुल डगमगा गयी इसका प्रमुख कारण वैश्विक महामारी कोरोना वायरस का देश में तेजी से फैलना है जो वर्तमान में लगभग 6 लाख लोगों को संक्रमित कर चुका है और 20 हजार लोगों की जान ले चुका है जिससे देश के उद्योगों का संचालन और विभिन्न व्यापारिक गतिविधियों का सही कार्य न करना है।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में आत्मनिर्भरता की परिभाषा में बदलाव आया है। आत्मनिर्भरता, आत्मकेन्द्रित से अलग है। भारत वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना में विश्वास करता है चूंकि भारत दुनिया का एक ही हिस्सा है। अतः भारत प्रगति करता है तो वह ऐसा करके आत्मनिर्भर भारत बनेगा। आत्मनिर्भर बनने के निम्न–निम्न कारण है –

प्रथम चरण – इसमें चिकित्सा, वस्त्र, इलैक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक, खिलौने, जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाये ताकि स्थानीय विनिर्माण और निर्यात को बढावा दिया जा सके।

द्वितीय चरण – इस चरण में रत्न एवं आभूषण, फॉर्मा, स्टील जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जायेगा।

आत्मनिर्भर भारत के स्तम्भ

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में निम्नलिखित स्तम्भों की आवश्यकता है –

1. **अर्थव्यवस्था –** जो वृद्विशील परिवर्तन के स्थान पर बडी उछाल अर्थव्यवस्था पर आधारित है।
2. **अवसंरचना –** ऐसी अवसंरचना जो आधुनिक भारत की पहचान बने और भारत को आत्मनिर्भर बनाये।
3. **प्रौद्योगिकी –** 21वीं सदी में भारत की औद्योगिकी संचालित व्यवस्था पर आधारित हो।
4. **गतिशील जनसंख्या –** भारत की जनसंख्या गतिशील हो जो भारत की ऊर्जा का स्त्रोत बने।
5. **मांग –** भारत की वस्तुओं की मांग देश–विदेश में हो निर्यात को प्रोत्साहन और आयात में कमी हो।

आत्मनिर्भरता भारत के लिये आर्थिक प्रोत्साहन की घोषणा

भारत के प्रधानमंत्री द्वारा आत्मनिर्भर भारत निर्माण की दिशा में विशेष पैकेट घोषणाएं की गयी है। कोविड–19 महामारी के दौरान सरकार ने RBI द्वारा लिये गये निर्णयों को मिलाकर 20 लाख करोड रू0. की घोषणा की गयी जिसमें सकल घरेलू (GDP) के लगभग 10 प्रतिशत बराबर पैकेज के भूमि, श्रम, तरलता और कानूनों पर ध्यान केन्द्रित किया गया।

तलिका – 1: प्रधानमंत्री द्वारा MSMEs के लिये की गई घोषणा

क्र0 सं0	सेवायें/योजनाएं	रूपये (करोड रूपये में)	प्रतिशत
1	इक्विटीइन्फ्यूशन	50000	31.908
2	तरलता सुविधा	45000	28.71
3	ई0 पी0 एफ0 समर्थन	30000	19.144
4	अधीनस्थ ऋण	20000	12.763
5	क्रेडिट गारण्टी योजना	9000	5.743
6	श्रमिकों के लिये	2500	1.595
7	ग्लोबल टैण्डर	200	0.127
	कुल योग	156,700	71.28

स्त्रोतः – इन्टरनेटवर्किंग साईट वर्ष 2019–2020

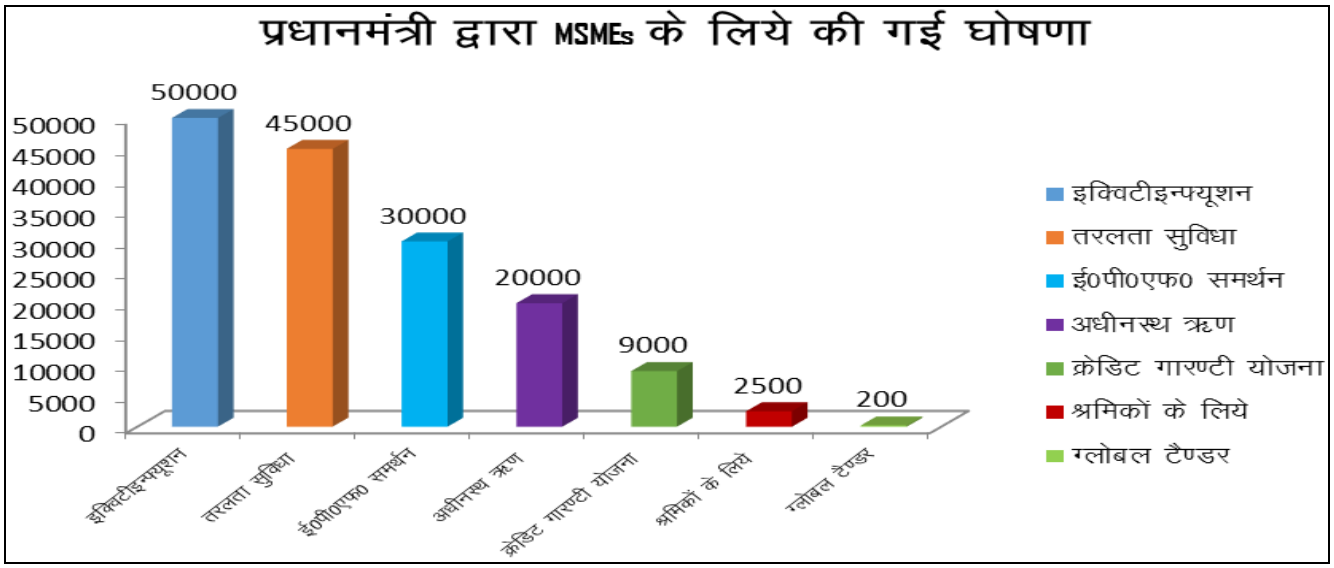

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि भारत के प्रधान मंत्री द्वारा देशहित में होने वाली योजनायें सबसे ज्यादा इक्विटीइन्फ्यूजन के द्वारा की गयी है जिसका प्रतिशत (31.908) है जबकि तरलता सुविधा के लिये खर्च (28.71%), श्रमिकों के लिये (1.595%), सबसे कम खर्च ग्लोबल टैण्डर (0.127%) है इससे प्रतीत होता है कि देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिये खर्च किया गया है।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिये सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग के लिये क्रेडिट गारन्टी योजनायें हाल ही में (MSMEs) तथा उद्योगों के लिये की गयी योजना को की घोषणाएं जैसे –

क्रेडिट गारण्टी

बैंकों द्वारा (MSMEs) को दिया जाने वाला ऋण अधिकतर (संपाश्रिक के रूप में) के आधार पर दिया जाता है लेकिन किसी विपत्ति जैसे कोरोना वायरस विपत्ति द्वारा इसमें गिरावट दर्ज की जाती है इसमें उद्यम को ऋण कम दिया जाता है और सरकार इस संबंध में बैंको को क्रेडिट गारण्टी दी जाती है यदि डैडम्रे उद्यम ऋण चुकाने में सक्षम नही होते तब यह ऋण सरकार द्वारा चुकाया जाता है।

मौजूदा MSMEs वर्गीकरण

आत्मनिर्भर भारत के सूक्ष्म मध्यम, व विनिर्माण उद्योगों मशीनरी उपकरण के निवेश की गयी राशि निम्नावत् होगी –

तालिका 2 – संयंत्र एवं मशीनरी या उपकरण में निवेश

वर्गीकरण	सूक्ष्म लाख रू0.	लघु (करोड रू0.)	मध्यम (करोड रू0.)
विनिर्माण उद्योग	25 लाख	5 करोड	10 करोड
सेवा उद्यम	10 लाख	2 करोड	5 करोड
कुल योग	35 लाख	7 करोड	15 करोड

स्त्रोतः – द्वितीय आंकडों पर आधारित वर्ष 2020

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि भारत में विभिन्न उद्योगों पर किया गया निवेश खर्च सूक्ष्म 35 लाख रूपये जबकि लघु उद्योग पर 7 करोड व मध्यम उद्योगों पर 15 करोड रूपये खर्च किये गये है। इससे स्पष्ट है कि भारत उद्योगों की दृष्टि से किये गये खर्च से आत्मनिर्भरता के पायदान पर है।

आत्मनिर्भरता भारत की समस्या एवं निदान

लॉकडाउन के बाद अनलॉक के पहले चरण में जिन्दगी पटरी पर लौटने का प्रयत्न कर रही है इसमें मोदी सरकार का ध्यान घरेलू बाजार पर होना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये शुभ संकेत है। इसके लिये ''वोकल फॉर लोकल'' के साथ आत्मनिर्भर भारत की बात कही गयी है। वास्तव में यह विचार गांधी के स्वराज की अवधारणा का नया रूप है इन्होनें हमेशा गांव को स्वावलंबी बनाने के लिये कुटीर उद्योगों को बढावा दिया और आत्मनिर्भर भारत का तात्पर्य दुनिया से जुडा रहना है उसकी गुणवत्ता में सुधारना और भारत के पुनर्निर्माण करना होता है, भारत आत्मनिर्भरता की निम्न समस्यायें सामने आती है –

1. भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिये मजदूरों की समस्याओं को दूर करना।
2. आर्थिक विकास की नीतियों का विकास का मुख्य केन्द्र गांव में होने वाले कृषि कार्य कुटीर उद्योग पर आधारित होना चाहिये।
3. आर्थिक विकास की नीतियां राष्ट्रीय स्तर पर न हो बल्कि राज्यों से प्रेरित जिलों पर आधारित हो।
4. गांव व शहर को रोजगार सूचना केन्द्र बनाने की समस्या को समाप्त किया जाना चाहिये।
5. लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर जोर देना चाहिये और मजदूरों को प्रशिक्षण दिया जाये।

6. उद्योगों का विकेन्द्रीकरण विकास की धारा को गांव, कस्बों तक लाया जा सके।
7. विदेशी कम्पनियों को भारत में निवेश के लिये आकर्षित करा जाये।
8. आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को श्रम सुधार शिक्षा का प्रसार से संभव बनाया जाये ताकि मजदूर अपने कार्यों को सही ढंग से कर सके।
9. श्रम सुधार, सिविल सुधार, कौशल सुधार, शिक्षा, विकास आदि समग्र सुधारों को संभव बनाया जाये।
10. आत्मनिर्भरता आने वाली वित्तीय प्रणाली विकसित की जाये जिससे ऋण वित की कमी से आसानी से निपटने की समस्या से निदान मिल सके।

निष्कर्ष

आत्मनिर्भर को अंग्रेजी में सेल्फ रिलांयस भी कहते है जब भारत के प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर की बात कर रहे थे तो वो सेल्फ रिलांयस की ही बात कर रहे थे उन्होनें हमें यह बताया कि हमे वोकल से लोकल होना है उसपर कौन सा टैक्स लगता है तो सभी लोग एक दम वोकल हो गये लेकिन हमारा देश कृषि प्रधान देश है यहां की 80 प्रतिशत लोग कृषि कार्य में संलग्न इसके अतिरिक्त उद्योग व्यापार, वाणिज्यिक गतिविधियों में लगे है इसी से देश की अर्थव्यवस्था नियन्त्रित होती है आत्मनिर्भर भारत बनने की राह भारत में प्रधानमंत्री जी ने जम्मू कश्मीर से धारा 370 और 35। का उन्मूलन, श्रीराम मंदिर के निर्माण के मार्ग का प्रशस्तीकरण, मुस्लिम महिलाओं को ट्रिपल तलाक के अभिशाप मुक्ति और नागरिकता कानून संशोधन के माध्यम से 70 सालों से वंचितों को उनके अधिकार दिलाकर कर दी थी उसके बाद अब आयुष्मान भारत देश के लगभग 50 करोड गरीबों के इलाज के बोझ से मुक्ति तथा महिलाओं को उज्जवला योजना के माध्यम से सशक्तिरण, किसानों को 6000 रू0. की आर्थिक सहायता और हर नागरिक को जन–धन खाते के माध्यम से पैसे पहुंचाना, वर्तमान समय में भारत कोरोना वॉयरस की चेट में आने से देश को 20 लाख करोड़ का आर्थिक पैकेज मुहैया करना जिससे लॉकडाउन से प्रभावित लोगों को अर्थव्यवस्था, रोजगार, कृषि एवं उद्योगों के लिए 20 लाख करोड की घोषणा करके आत्मनिर्भर भारत के अभ्युदय का नया सूरज उगाया। अब तक 60 हजार करोड रूपये से अधिक की राशि विभिन्न योजनाओं के माध्यम से केवल दो महीनों में गरीबों, मजदूरों, किसानों, विधवाओं, बुजुर्गो और दिव्यांगों के एकाउण्ट में हस्तान्तरित किये जा चुके है, गरीबों को पांच महीने तक राशन मुफ्त और मनरेगा के लिये 60 हजार करोड का बजट तैयार किया, के बल पर भारत को सुदृढ न्यू इण्डिया बल्कि आत्मनिर्भर का संकल्प तैयार हो सके।

आत्मनिर्भर भारत की झलक पिछले डेढ माह में दिख गई कि भारत हर तरह की चुनौतियों से पार पाने में सक्षम है। अप्रैल में जहां हम पी0 पी0 ई0 किट, वेंटीलेटर और N95 के लिये पूर्ण आयात पर निर्भर थे वहीं आज हम बडे पैमाने पर इसका उत्पादन कर रहे है। आज देश में प्रतिदिन 3.2 लाख पी0 पी0 ई0 किट (अब तक 1 करोड पी0 पी0 ई0 किट भारत में बनाये गये), 2.5 लाख मास्क और वेंटीलेटर का विकास हो चुका है। इस संकट से उभरने के लिये हमने दुनिया के 55 से अधिक देशों को जरूरत की दवाईयों की आपूर्ति की है और भारत लॉकडाउन के चलते कोरोना को रोकने में सफलता पाई है इससे स्पष्ट होता है कि हम आत्मनिर्भरता के पायदान पर खडे है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 प्रमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।
2. वर्मा अंजलि, 2009, भारत में कार्यशील महिलाएं, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. सिंह वी0 एन0, 2010, आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
4. आहुजा राम, 2009, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
5. स्वतंत्र जन समाचार, मुंबई, 16 सितम्बर, 2006।
6. गुडे. विलियम जे. 1968 वर्ल्ड रिवॉल्यूशन फण्ड फैमिली पैटर्न दी. फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क कोलियर मेडमिलन, लंदन।

अन्य सन्दर्भ

1. दैनिक समाचार पत्र–पत्रिकायें।
2. इण्टरनेट वेबसाईट।
3. आरोग्य सेतु ऐप।
4. टी0 वी0, समाचार सूचना आदि।